उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया: व्याख्या के आधार

अध्याय 5

अर्थ की जटिलता

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना....1
शाब्दिक भाव....1
अनेक अर्थ....3
एकमात्र अर्थ....7
संपूर्ण महत्व....10
वास्तविक अर्थ....11
बाइबल के विस्तारण....12
वैध अनुप्रयोग....16
उपसंहार....20

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया:
व्याख्या के आधार

अध्याय पाँच
अर्थ की जटिलता

प्रस्तावना

एक पुरानी कहावत है जो बाइबल की व्याख्या-शास्त्र की चर्चा में अक्सर सुनी जाती है। यह कुछ इस तरह से है, "एक अर्थ है, लेकिन उस अर्थ के अनेक अनुप्रयोग हैं।" उदाहरण के लिए, बाइबल हमें एक सरल, व सीधा सा निर्देश देती है जैसे, "अपने पड़ोसी से प्रेम करो।" लेकिन जब हम विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न पड़ोसियों के साथ व्यवहार करते हैं तो हमें इस निर्देश को अपने जीवनों में कई अलग-अलग तरीकों से लागू करना चाहिए।

अब, यह अंतर्दृष्टि चाहे कितनी भी मददगार हो, लेकिन जब पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने की बात आती है, तो हमें यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि बाइबल के प्रत्येक अनुच्छेद का अर्थ जटिल या बहुआयामी है। इसलिए, यह कहने की बजाय कि, "एक अर्थ है लेकिन अनेक अनुप्रयोग हैं," कुछ ऐसा कहना अधिक उपयोगी है: "एक अर्थ है, लेकिन उस एक अर्थ के अनेक आंशिक सारांश हैं। और उससे भी कहीं अधिक अनुप्रयोग हैं।" बाइबल के प्रत्येक अनुच्छेद का एक अर्थ इतना जटिल है कि हमें यह सीखना चाहिए कि इसे कई अलग-अलग तरीकों से कैसे सारांशित किया जाए, और फिर हमारे जीवनों में लागू किया जाए।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह पाँचवां अध्याय है: *व्याख्या के आधार।* हमने इस अध्याय का शीर्षक "अर्थ की जटिलता" रखा है क्योंकि हम उन तरीकों का पता लगाएंगे जिनमें युगों के दौरान मसीहों ने बाइबल के अनुच्छेदों के लिए अर्थ के विभिन्न प्रकारों और कईयों को लागू किया है।

बाइबल में अर्थ की जटिलता पर हमारी चर्चा दो भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम उस बात को देखेंगे जिसे व्याख्याकारों ने अक्सर पवित्र शास्त्र का "शाब्दिक भाव" कहा है। और दूसरा, हम किसी भी पाठ्यांश के संपूर्ण महत्व पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जो विभिन्न तरीकों में शाब्दिक भाव से बढ़कर है। आइए पहले पवित्र शास्त्र के शाब्दिक भाव पर गौर करें।

शाब्दिक भाव

लातीनी शब्द *सेंसस लिटरलिस* द्वारा कभी-कभी "शाब्दिक भाव" वाले शब्द को हमारे समय में, अक्सर "शाब्दिक व्याख्या" वाले शब्द के साथ भ्रमित किया जाता है। "शाब्दिक व्याख्या" बाइबल को समझने के भावहीन या यांत्रिक दृष्टिकोण को संदर्भित करता है। लेकिन ऐतिहासिक रूप से, "शाब्दिक भाव" वाले शब्द का अर्थ हमेशा कुछ इस तरह से ज्यादा था जिसे सुसमाचारीक लोगों ने अनुच्छेद का "मूल अर्थ" या "व्याकरणिक-ऐतिहासिक अर्थ" कहा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

शाब्दिक भाव लेखक के इरादों और उनके मूल श्रोताओं के ऐतिहासिक संदर्भों के अनुसार पवित्र शास्त्र के शब्दों और वाक्यांशों को लेता है।

यह पवित्र शास्त्र में विभिन्न शैलियों पर ध्यान देता है। सिर्फ नाम के लिए, यह रूपकों, उपमाओं, समरूपताओं, अतिश्योक्तियों — जैसे अलंकारों को स्वीकार करता है। यह इतिहास को इतिहास के रूप में, कविता को कविता के रूप में, नीतिवचन को नीतिवचन के रूप में देखता है, और इसी तरह से।

> बाइबल की पुस्तकों की कई विभिन्न रचना-शैलियां हैं, और उन रचना-शैलियों में अंतरों को समझना महत्वपूर्ण है ताकि हम उन्हें उचित रीति से समझ एवं उनकी व्याख्या कर सकें। हम सभी रचना-शैलियों को एकदम समान रूप से एक ही जैसा काम करता हुआ नहीं समझते हैं। और इसलिए बाइबल की पुस्तकों की रचना-शैली को समझने और उस पर ध्यान देने के द्वारा, हम पुस्तक को स्वयं यह एजेंडा निर्धारित करने की अनुमति देते हैं कि हमें इन पुस्तकों की व्याख्या कैसे करनी है।
>
> — डॉ. ब्रैन्डन क्रोव

जब हम यह देखते हैं कि बाइबल के अनुच्छेद के शाब्दिक भाव में पृष्ठ पर लिखे मात्र शब्दों से बहुत अधिक शामिल है, तो हम इस बात में जागरूक होने लगते हैं कि प्रत्येक अनुच्छेद का *सेंसस लिटरलिस* कितना जटिल हो सकता है। लेखकों के इरादें बहुआयामी हैं। रचना-शैली पर विचार किसी भी अनुच्छेद के अर्थ को जटिल बनाता हैं। भाषा के स्वरूप और इन्ही के जैसे अन्य बातें कई सारे विचारों को जन्म देते हैं। ये कारक बाइबल के हर अनुच्छेद के मूल अर्थ के लिए कई सारी जटिलताओं को उजागर करते हैं। और इन जटिलताओं ने अलग-अलग तरीकों से पवित्र शास्त्र के अर्थ को खोजने के लिए कई बुद्धिजीवी मसीहों की अगवाई की है।

पूरे इतिहास के दौरान, मसीहों ने लगभग सर्वसम्मति से बाइबल के पाठ्यांशों के शाब्दिक भाव या मूल अर्थ को खोजने की आवश्यकता की पुष्टि की है। लेकिन तर्क देते हुए कुछ अन्य आवाज़ें भी रही हैं कि पवित्र शास्त्र का अर्थ इतना जटिल है कि इसे शाब्दिक भाव के शीर्षक के तहत पर्याप्त रूप से सारांशित नहीं किया जा सकता है। इसलिए, हमारे अध्याय के इस भाग में, यह देखने के लिए कि कैसे पवित्र शास्त्र के जटिल अर्थ को शाब्दिक भाव ने उचित रीति से समझा है, और इसकी जाँच करने और वर्णन करने में कैसे यह हमारी मदद कर सकता है हम “शाब्दिक भाव” वाले शब्द के इतिहास का पता लगाएंगे।

हम उन दो प्रमुख तरीकों को देखेंगे जिनमें पवित्र शास्त्र के अर्थ की जटिलता को इसके शाब्दिक भाव के साथ जोड़ा गया है। सबसे पहले, हम देखेंगे कि मसीह के कुछ अनुयायियों ने कहा है कि शाब्दिक भाव पवित्र शास्त्र के अनेक अर्थों में से एक है। और दूसरा, हम इस विचार पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि शाब्दिक भाव बाइबल का एकमात्र अर्थ है। आइए पहले इस विचार पर ध्यान दें कि शाब्दिक भाव पवित्र शास्त्र के अनेक अर्थों में से सिर्फ एक है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अनेक अर्थ

आरंभिक कलीसिया में, यह विचार कि पवित्र शास्त्र के अनेक अर्थ हैं, बहुत हद तक व्याख्या-शास्त्र के रूपक-संबंधी दृष्टिकोणों से उत्पन्न हुए। एक रूपक-संबंधी दृष्टिकोण वह है जो पवित्र शास्त्र में वर्णित ऐतिहासिक लोगों, स्थानों, चीज़ों और घटनाओं की व्याख्या ऐसे करता हैं जैसे कि आध्यात्मिक सत्यों के प्रतीक या अलंकार थे। एक पेड़ किसी राज्य को चित्रित कर सकता है, एक युद्ध पाप के साथ आंतरिक संघर्ष को दिखा सकता है, और इसी तरह से अन्य। रूपक-संबंधी व्याख्याओं में, बाइबल में वर्णित भौतिक वास्तविकताओं को अक्सर कम करके दिखाया जाता है और यहाँ तक कि महत्वहीन या असत्य के रूप में खारिज किया जा सकता है। और इन भौतिक वास्तविकताओं द्वारा प्रस्तुत आध्यात्मिक विचारों को पवित्र शास्त्र के अधिक महत्वपूर्ण बातों के रूप में माना जाता है।

मसीही रूपक-संबंधी दृष्टिकोणों को कभी-कभी अलेक्ज़ेंड्रिया के यहूदी विद्वान फिलो द्वारा रचित माना जाता है जो लगभग 20 ईसा पूर्व से शायद सन् 50 तक रहे थे। फिलो ने इब्रानी पवित्र शास्त्रों को उच्च आत्मिक सत्यों को उजागर करने वाले रूपकों के रूप में देखकर मसीही रूपक-संबंधी तरीकों की नींव रखी।

फिलो के बाद, कलीसिया के शुरूआती शताब्दियों के दौरान, प्रमुख मसीही विद्वानों ने बाइबल के पुराने और नए नियम दोनों की व्याख्या करने के लिए इसी दृष्टिकोण को अपनाया। यह विशेष रूप से अलेक्ज़ेंड्रिया के धर्मशिक्षा वाले विद्यालय में सच था, जो ईश्वरीय-ज्ञान के छात्रों को ईश्वरीय-ज्ञान और बाइबल की व्याख्या सिखाता था।

धर्मशिक्षा वाले विद्यालय के शिक्षकों में से अधिक प्रसिद्ध ओरिजेन थे, जो सन् 185 से लगभग सन् 254 तक रहे थे। ओरिजेन ने पवित्र शास्त्र के अर्थ को दो श्रेणियों में विभाजित किया: शाब्दिक भाव और आत्मिक भाव। 2 कुरिन्थियों 3:6 में व्यवस्था के शब्द और आत्मा के बीच पौलुस के अन्तर से निष्कर्ष निकालते हुए, ओरिजेन ने कहा कि पवित्र शास्त्र के प्रत्येक अनुच्छेद के दो मुख्य तरह के अर्थ होते हैं: पाठ्यांश के शब्द और पाठ्यांश की आत्मा। “शब्द” से, ओरिजेन का अर्थ उनके व्याकरणिक संदर्भ में शब्दों के स्पष्ट अर्थ से है। और पाठ्यांश की आत्मा से, उसका अर्थ आलंकारिक भाव हैं — ऐसे अर्थ जो स्वयं शब्दों के स्पष्ट अर्थ से बढ़कर है। ओरिजेन ने पाठ्यांश के शब्द को उसके शाब्दिक अर्थ के साथ बराबर मानने की प्रवृति रखी, और उसने शाब्दिक अर्थ के अधिकार का बचाव किया। लेकिन इसके अलावा, ओरिजेन ने तर्क दिया कि पवित्र शास्त्र के आत्मिक भाव को पाने के लिए विश्वासियों को शाब्दिक अर्थ से बढ़कर खोजना चाहिए।

उदाहरण के लिए, अपनी रचना *ऑन फर्स्ट प्रिंसिपल्स,* पुस्तक 4, अध्याय 1, भाग 16 में, ओरिजेन ने तर्क दिया कि उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि की कहानियां बुद्धि के विपरीत है, और इसलिए मसीहों को उनके शाब्दिक भाव को अनदेखा करना चाहिए और गहरे आत्मिक अर्थों की खोज करनी चाहिए। आश्चर्य की बात नहीं, कि पूरे इतिहास में ओरिजेन के रूपक-संबंधी विधियों की कई बार आलोचना की गई है। लेकिन फिर भी आरंभिक मसीही व्याख्या-शास्त्र की दिशा पर उनके दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण प्रभाव था।

> जॉन क्रिसोसट्टॉम जैसे कुछ प्राचीन व्याख्याकारों के पास बाइबल की कहानियों जैसे प्रेरितों की पुस्तक पर कुछ उत्कृष्ट अंतर्दृष्टि थी, और वह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उन्हें अधिक शाब्दिक रूप से पढ़ने की प्रवृति रखते थे। जिस तरह से हम आमतौर पर कहानी को पढ़ते हैं, हम उस बात को सुनने की कोशिश करते हैं जो कहानी कह रही है और हम कहानी से सबक या नैतिकता खोजने की कोशिश करते हैं। आपके पास ओरिजेन जैसे अन्य व्याख्याकार हैं जो रूपक प्रयोग के लिए प्रवृति रखते थे, उन्हें प्रतीकों की श्रृंखला में बदलते थे, और इस पद्धति का खतरा यह है कि यह वास्तव में वह तरीका नहीं है जिस तरह से बाइबल को समझने के लिए इसे हमारे लिए लिखा गया था। आपके पास वह तरीका है जो वास्तव में यूनानी दार्शनिकों से लिया गया है जो पुराने मिथकों को, पुराने मिथकों में शर्मनाक बातों को समझाने की कोशिश कर रहे होते थे, और कभी-कभी उस तरीके में, बाइबल के लिए दृष्टिकोण उसके आसपास रहता है। वे अब उन बातो को सुनने का प्रयास नहीं कर रहे हैं जो पाठ्यांश ने स्वयं कहा। एक मायने में, इसमें कुछ और ही भाव पढ़कर, वे इसे कुछ अधिक प्रेरित हुआ बनाने की कोशिश कर रहे हैं। इसी समय पर, यहाँ तक कि कभी-कभी ओरिजेन के पास भी कुछ बहुत ही अच्छी अंतर्दृष्टि है।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

बाइबल के लिए आत्मिक या रूपक-संबंधी दृष्टिकोणों की ओर ओरिजेन की प्रवृति आरंभिक कलीसिया पर नव-प्लेटोनिकवाद के प्रभाव को दर्शाते हैं। इस दृष्टिकोण में, पवित्र शास्त्र परमेश्वर से आया है जो पवित्र स्वर्गीय आत्मा था। और परिणामस्वरूप, यह माना गया था कि वास्तव में पवित्र शास्त्र ने भौतिक संसार के बारे में नहीं सिखाया। भौतिक पदार्थ, स्वयं अपने स्वभाव से, बुरा था। इसलिए, जब पवित्र शास्त्र ने इतिहास में घटित भौतिक वस्तुओं का उल्लेख किया, तो उन्होंने वास्तव में स्वर्गीय, आत्मिक सत्यों की ओर संकेत किया जिन्हें रूपक द्वारा समझा जा सकता है। इस दृष्टिकोण में, पवित्र शास्त्र का सही अर्थ, इन अधिक से अधिक सत्यों में था, और इन सत्यों को समझना बाइबल व्याख्या का सर्वोच्च लक्ष्य था।

दुःख की बात है कि कई मसीही धर्मविज्ञानियों ने इन धारणाओं को अपनाया। और जब उन्होंने ऐसा किया, तब उन्हें भौतिक संसार की बाइबल कहानियों के साथ गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ा। पुराना नियम इन बातों पर ध्यान केंद्रित करता है जैसे : ब्रह्माण्ड की सृष्टि, परमेश्वर के लोगों के जीवनों में सांसारिक आशीषें, मिस्र में गुलामी से इस्राएल का शारीरिक छुटाकारा, और प्रतिज्ञा किए हुए देश में परमेश्वर के लोगों के लिए सांसारिक राज्य। और नया नियम यीशु के जीवन और प्रेरितों के जीवनों में घटी सांसारिक घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। नव-प्लेटोनिकवाद द्वारा प्रभावित मसीहों के लिए, इन इतिहासों के भौतिक पहलू समस्यात्मक थे क्योंकि इन बातों ने भौतिक संसार को परमेश्वर की अच्छी सृष्टि के रूप में दर्शाया। इसलिए, बाइबल और नव-प्लेटोनिकवाद दर्शन का सामंजस्य कराने के साधन के रूप में, उन्होंने रूपक-संबंधी व्याख्याओं के शिक्षा संस्थाओं से अपील की। उनके व्याख्या-शास्त्र वाले दृष्टिकोणों ने बाइबल में दर्ज भौतिक वास्तविकताओं को कम करके आंका, और उन गहन आत्मिक सत्यों को खोजने के लिए मसीहों को प्रोत्साहित किया जिसे वे सिखाना चाह रहे थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पवित्र शास्त्र का आत्मिक भाव कई विभिन्न तरीकों से खोजा एवं वर्गीकृत किया गया था। एक प्रभावशाली दृष्टिकोण को *क्वाड्रिगा* के रूप में जाना जाता था — चार घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रोमी रथ के लिए एक लातीनी शब्द। पवित्र शास्त्र हेतु क्वाड्रिगा की छवि को यह दर्शाने के लिए लागू किया गया था कि पवित्र शास्त्र को चार अलग-अलग अर्थों के लिए सुसज्जित किया गया था।

लगभग सन् 360 से 435 तक रहे जॉन केसियन ने, इस दृष्टिकोण का वर्णन अपनी रचना *कॉनफरेन्सिस,* कॉनफरेन्स 14, अध्याय 8 में कुछ विस्तार से किया। केसियन ने शाब्दिक और आत्मिक भावों के बीच ओरिजेन के मूल अंतर का अनुसरण किया। लेकिन तीन प्रकारों के आत्मिक अर्थों की पहचान करके वह इससे भी आगे गया: रूपक-संबंधी भाव, जो अनुच्छेद की सैद्धांतिक शिक्षा थी; लाक्षणिक भाव, जो अनुच्छेद की नैतिक शिक्षा थी; और रहस्यात्मक भाव, जो स्वर्ग और अंतिम समय के उद्धार के बारे में अनुच्छेद की शिक्षा थी।

उदाहरण के लिए, *क्वाड्रिगा* के अनुसार, जब बाइबल का अनुच्छेद "यरूशलेम" का उल्लेख करता है, तो इस हवाले को चार तरीकों में समझा जा सकता है। इसके शाब्दिक भाव में यह इस्राएल की प्राचीन राजधानी है। इसके रूपक-संबंधी भाव में, यह कलीसिया के मसीही सिद्धांत को बताता है। इसके लाक्षणिक भाव में, यह यरूशलेम या एक विश्वासयोग्य विश्वासी या मानवीय आत्मा के नैतिक गुण हो सकते हैं। और इसके रहस्यात्मक भाव में, यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वर्णित स्वर्गीय नगरी हो सकती है।

अब, यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सदियों के दौरान बाइबल के व्याख्याकारों ने इस बात पर तर्क-वितर्क किया कि बाइबल के अनुच्छेद के आत्मिक अर्थों को इसके शाब्दिक अर्थ के साथ कितनी बारीकी से जोड़ा जाना चाहिए। कुछ लोगों ने तर्क दिया कि सभी अर्थ शाब्दिक अर्थ के साथ सजीव रूप से जुड़े थे, लेकिन अन्यों ने कहा कि पाठ्यांश का प्रत्येक भाव दूसरे से स्वतंत्र था। और उन्होंने छिपे हुए आत्मिक अर्थों के लिए अपील की जिनका शाब्दिक भाव के साथ कोई लेना-देना नहीं था।

सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, 1090 से 1153 तक रहे प्रभावशाली फ्रांसीसी धर्मविज्ञानी बर्नार्ड ऑफ क्लैरवॉक्स ने पवित्र शास्त्र की कुछ ऐसी अत्यंत कल्पनात्मक व्याख्याओं को बढ़ावा दिया, जिन्होंने इसके आत्मिक भावों को इसके शाब्दिक भाव से अलग कर दिया। उदाहरण के लिए, सुलैमान के श्रेष्ठगीत के लिए उनकी व्याख्या पूरी तरह से पाठ्यांश के शाब्दिक भाव से असंबंधित थी।

सुलैमान के श्रेष्ठगीत 1:17 से इन वचनों को सुनिए:

> **हमारे घर के धरन देवदार हैं और हमारी छत की कड़ियाँ सनौवर हैं (श्रेष्ठगीत 1:17)।**

जब हम इस अनुच्छेद को इसके ऐतिहासिक संदर्भ में पढ़ते हैं, तो यह देखना कतई मुश्किल नहीं है कि यह सुलैमान के वास्तविक महल का एक विवरण था। इसने राजा के शाही आवास के आश्चर्य की ओर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा उसकी बढ़ाई की।

लेकिन अपनी व्याख्या को संचालित करने की अनुमति बर्नार्ड ऑफ क्लैरवॉक्स ने इस पद के शाब्दिक, व्याकरणिक-ऐतिहासिक भाव को नहीं दी। उनके दृष्टिकोण से, इस अनुच्छेद ने

वास्तव में आत्मिक वास्तविकताओं को चिह्नित किया। स्वयं घर ने परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व किया। और घर के धरन और छत की कड़ियों ने कलीसिया के अधिकारियों से मेल खाई। उसने आगे यह भी कहा कि इस पद ने सिखाया कि कलीसिया और देश को भी कैसे एक दूसरे के साथ-साथ काम करना है। इस अनुच्छेद में बर्नार्ड ने जो सोचा कि उसने आत्मिक अर्थ पा लिए हैं, वे न तो इसके शाब्दिक भाव से निकले, और न ही उसके साथ मेल खाते हैं।

> मार्टिन लूथर ने उत्पत्ति के अपने व्याख्यान में, वह व्याख्या के इस रूपक-संबंधी शैली के बारे में बात करते हैं — और रूपक-संबंधी से मेरा अर्थ लेखक के अभिप्रेत रूपक से नहीं है, लेकिन पाठ्यांश को लेना और उस तरीके से रूपक प्रयोग करना जिसका कि इरादा लेखक ने नहीं किया था। और वह कहता है कि अपने युवावस्था में, अपने युवा काल में, लूथर कहता है कि मैं भी इसमें बहुत अच्छा था, और मुझे इसके लिए बहुत प्रशंसा मिली। लेकिन यह पवित्र शास्त्र के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है। कैल्विन भी इस रूपक प्रयोग के बारे में बोलते हैं और कहते हैं कि यह पवित्र शास्त्र में मोम की नाक लगाने जैसा है और इसे आप लेखक के प्रति विश्वासयोग्य होने की बजाय किसी भी दिशा में जिसमें व्याख्याकार चाहता है मोड़ सकते हैं ... फिर भी, मैं सोचता हूँ कि कलीसिया के पिताओं को पढ़ना मूल्यवान है, और लूथर ने जब उनकी आलोचना की, तो स्पष्ट रूप से उन्हें पढ़ा, भी है। हम उनसे सीखते हैं, कि अक्सर जब वे अवैध रूप से सच्चे सिद्धांतों को लेते हैं और उन्हें उन पाठ्यांशों में डालते हैं जो वैसा नहीं कह रहे हैं, तो हम समझते हैं कि वे क्या करने की कोशिश कर रहे थे। वे समझने की कोशिश कर रहे थे कि कैसे पुराने नियम की व्याख्या करें और इसे मसीहों के लिए प्रासंगिक बनाए, यहाँ तक कि, हम कहेंगे, मैं सोचता हूँ कि वे अक्सर कभी-कभी इसमें भटक जाते थे। इसलिए उन्होंने पवित्र शास्त्र की व्याख्या कैसे की इस बारे में हम सीख सकते हैं। और पूरे कलीसियाई इतिहास के दौरान व्याख्या के कई ऐसे विश्वासयोग्य उदाहरण भी हैं जिनसे हम सीख सकते हैं।
>
> — डॉ. रॉबर्ट एल. प्लम्मर

यह विचार कि पवित्र शास्त्र के अनेक अर्थ हैं, समकालीन संसार में भी व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं, लेकिन अधिकतर विभिन्न कारणों से। यह तर्क देने के बजाय कि कई स्तरों पर संवाद करने के लिए परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र को डिज़ाइन किया, कई आधुनिक व्याख्याकारों का मानना है कि बाइबल के अनेक अर्थ स्वयं भाषा के अंतर्निहित अस्पष्टताओं से उत्पन्न हुए हैं। वे तर्क देते हैं कि भाषा इतनी अस्पष्ट है कि इसका एक भी सटिक अर्थ कभी नहीं हो सकता है। और इस कारण से, बाइबल के कुछ अर्थों की अस्पष्ट सीमाओं या सीमारेखाओं का निर्धारण करना ही वह बात है, जो हम सबसे अच्छे से कर सकते हैं। लेकिन इस दृष्टिकोण में, बाइबल के इन अनेक अर्थों को सत्यापित नहीं किया जा सकता है और उन्हें सिर्फ इसलिए

स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि एक व्यक्ति यह तय करता है कि इसका अर्थ यह है और दूसरा व्यक्ति तय करता है कि यह है।

अब जबकि हमने देख लिया है कि बहुत से मसीही लोगों ने पवित्र शास्त्र के शाब्दिक भाव को इसके अनेक अर्थों में से एक माना है, आइए इस दृष्टिकोण पर विचार करें कि शाब्दिक भाव ही पवित्र शास्त्र का एकमात्र अर्थ है।

एकमात्र अर्थ

लगभग 1225 से 1274 तक रहे प्रसिद्ध धर्मविज्ञानी थॉमस एक्विनास ने क्वाड्रिगा के लिए इससे अधिक जिम्मेदार दृष्टिकोण का समर्थन किया। अपने पूर्ववर्तियों और समकालीनों के विपरीत, उन्होंने जोर देकर कहा कि पवित्र शास्त्र का शाब्दिक भाव इसके अन्य सभी भावों के लिए मूलभूत था। उदाहरण के लिए, अपनी *सुम्मा थियोलॉजिका,* भाग 1, प्रश्न 1, अनुच्छेद 10 में, उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रत्येक वैध आत्मिक व्याख्या किसी भी अनुच्छेद के शाब्दिक भाव में निहित था। उन्होंने यह भी सिखाया कि विश्वास के लिए आवश्यक कुछ भी ऐसा आत्मिक अर्थ के रूप में नहीं बताया गया था जो कि शाब्दिक भाव में पवित्र शास्त्र में कहीं और न सिखाया गया था। सभी विद्वान इस बात से सहमत नहीं होंगे कि एक्विनास ने हमेशा इन सिद्धांतों का पालन किया जब उन्होंने पवित्रशास्त्र की व्याख्या की थी। लेकिन फिर भी, उन्होंने इस सिद्धांत पर जोर दिया कि पवित्र शास्त्र के किसी भी अनुच्छेद के प्रत्येक भाव को इसके शाब्दिक अर्थ से जोड़ा जाना चाहिए।

हालाँकि बाइबल के शाब्दिक अर्थ में आत्मिक अर्थ को जोड़ने का एक्विनास का प्रयास हममें से अधिकांश को सहज ज्ञान लग सकता है, लेकिन उनके दृष्टिकोण को सभी ने नहीं अपनाया। अनुच्छेदों के शाब्दिक अर्थ से जिन आत्मिक व्याख्याओं को काटा गया था उनका उपयोग मध्ययुगीन कलीसिया के कई सिद्धांतों का समर्थन करने के लिए किया गया था। और कलीसिया के अधिकारियों ने जोर दिया कि उनके पास आत्मिक अर्थों में परमेश्वर दुवारा दी गई विशेष अंतर्दृष्टि थी जिनका बाइबल के शाब्दिक अर्थ से कोई लेना-देना नहीं था।

लेकिन चौदहवी से सत्रहवीं शताब्दी के दौरान युरोप में पुनर्जागरण ने पवित्र शास्त्र की व्याख्या में एक नाटकीय बदलाव के लिए मंच तैयार किया। संक्षेप में, पुनर्जागरण के विद्वानों ने अपनी मूल भाषाओं में शास्त्रीय साहित्यिक, दार्शनिक और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करना शुरू किया। जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने इन पाठ्यांशों के शाब्दिक, ऐतिहासिक भाव को उजागर करने के द्वारा कलीसिया के अधिकार से हटकर इन पाठ्यांशों की भी व्याख्या की। और जल्द ही यह दृष्टिकोण पवित्र शास्त्र के लिए भी लागू किया गया था। व्याख्या की इस रणनीति ने शाब्दिक भाव के साथ उसकी बराबरी की, जिसे हमने बाइबल के अनुच्छेदों का मूल अर्थ कहा है। और इसने इस शाब्दिक, मूल अर्थ की केंद्रीयता और अधिकार पर जोर दिया।

> खैर, मध्ययुगीन कलीसिया में, अधिकांश विश्वासियों ने पुष्टि की कि पवित्र शास्त्र में परमेश्वर की पूर्ण मंशा को चार दृष्टिकोणों के माध्यम से जाना जाता है: शाब्दिक, रहस्यात्मक, रूपक-संबंधी और उसके बाद नैतिक। इसलिए सोलहवीं सदी के सुधारकों ने — जिन्हें हम में से अधिकांश द्वारा प्रोटेस्टेंट कहा जाता है —इस पर आपत्ति जताई, आंशिक रूप से सिद्धांत में लेकिन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> जो उससे निकल कर आया, जो सिखाने की ऐसी परंपरा थी जिसे उन्होंने महसूस किया, कुछ मामलो में, पवित्र शास्त्र को भ्रष्ट करना था, या इसने कलीसिया के अधिकार के पक्ष में पवित्र शास्त्र के लेखन इरादे या मूल इरादे को अस्पष्ट कर दिया।
>
> — डॉ. जेम्स डी. स्मिथ III

> क्वाड्रिगा, या पवित्र शास्त्र के चार-स्तंभ वाले भाव की मसीही कलीसिया के भीतर एक लंबे समय की और प्राचीन इतिहास की परंपरा रही है ... इसलिए, और रिफॉर्मेशन के समय कुछ कैथोलिक समकक्षों द्वारा रिफॉर्म्ड पिताओं को इस पर ढकेला गया, क्योंकि रिफॉर्मर्स जोर दे रहे थे कि पवित्र शास्त्र का केवल एक ही भाव या अर्थ है। लेकिन जवाब में, उदाहरण के लिए, विलियम व्हिटटेकर जैसे लोगों ने कहा कि हम क्वाड्रिगा को अस्वीकार नहीं करते, उनका कहना कि पवित्र शास्त्र के लिए चार भाव है; हम इस विचार को अस्वीकार करते हैं कि पवित्र शास्त्र के चार अर्थ या भाव हैं। वह सिर्फ एक है, और वह है ऐतिहासिक, शाब्दिक और व्याकरणिक। लेकिन बाकी तीन ऐसे संग्रहण हैं या जिन्हें हम आज अनुप्रयोगों के रूप में, कुछ-कुछ इसी दिशा में सोच सकते हैं। विचार यह है कि वे उस एक भाव में आधारित हैं, लेकिन वे यह सोचने के लिए उचित प्रकारों की दिशाएं हैं कि कैसे वह एक भाव आज बाइबल के पाठकों के रूप में हमारे लिए लागू होता है। और इसलिए, यह क्वाड्रिगा का पूरी तरह से अस्वीकरण नहीं था, जितना कि उसका सुधार था, उस पर फिर से कार्य करना, ताकि विश्वास, आशा और प्रेम की दिशाओं के साथ अनुप्रयोग की इन तीन विभिन्न दिशाओं के साथ अब एक भाव है।
>
> — डॉ. ब्रूस बॉगस

पुनर्जागरण के दौरान, प्रोटेस्टेंट लोगों ने उन विचारों को विकसित करना जारी रखा जिनका एक्विनास द्वारा समर्थन किया गया था। लेकिन उन्होंने यह तर्क नहीं दिया कि सभी आत्मिक अर्थ सिर्फ पवित्र शास्त्र के शाब्दिक अर्थ में आधारित हैं। इसके बजाय, उन्होंने कहा कि पाठचांश के सभी पहलू जो लेखक द्वारा अपने मूल श्रोताओं के लिए अभिप्रेत थे, वास्तव में इसके शाब्दिक भाव के पहलू हैं। उनका मानना था कि पवित्र शास्त्र का शाब्दिक भाव, या मूल अर्थ, एकमात्र एवं जटिल, दोनों हैं। हम यह कह सकते हैं कि पुनर्जागरण के प्रोटेस्टेंट लोगों ने "शाब्दिक" शब्द की अवधारणा को व्यापक बना दिया, ताकि इसमें वह सब कुछ शामिल हो, जिसे लेखक ने पवित्र शास्त्र के "साहित्य" को व्यक्त करने के लिए अभिप्रेत किया। परिणामस्वरूप, उलरिक ज्विंगली, मार्टिन लूथर और जॉन केल्विन जैसे प्रमुख हस्तियों ने शाब्दिक या मूल अर्थ को उस रूप में सोचा जिसमें वह सब कुछ शामिल है जो बाइबल के प्रत्येक अनुच्छेद का अर्थ है। उन्होंने शाब्दिक भाव को एक जटिल अर्थ के रूप में देखा जिसमें ऐतिहासिक, सैद्धांतिक, नैतिक और अंतिम समय से संबंधित पहलू शामिल थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

एक कटे हुए रत्न की इससे तुलना करके पवित्र शास्त्र के शाब्दिक भाव के प्रोटेस्टेंट विचारधारा को समझने में मदद मिल सकती है। कटे हुए रत्नों के कई "पहलू" या "चेहरे" होते हैं, ठीक उसी तरह से जैसे कई छोटे भाव होते हैं जो पवित्र शास्त्र के शाब्दिक भाव के लिए योगदान देते हैं। पवित्र शास्त्र के प्रत्येक अनुच्छेद को इसके लेखक द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों, सिद्धांतों, नैतिक दायित्वों, उद्धार और अंतिम समय, आदि के बारे में कुछ बताने के लिए अभिप्रेत किया गया था।

इसके अलावा, किसी भी रत्न का प्रत्येक पहलू एक विशेष सतह है जो पूरे रत्न की सुंदरता के लिए योगदान देता है, और कोई भी एक चेहरा संपूर्ण रत्न होने का दावा नहीं कर सकता। इसी तरह से, बाइबल के अनुच्छेदों के अलग-अलग पहलू हैं जो शाब्दिक भाव के अर्थ के लिए योगदान करते हैं, और इनमें से कोई भी छोटा पहलू संपूर्ण शाब्दिक भाव होने का दावा नहीं कर सकता है।

सरल शब्दों में कहें तो, पवित्र शास्त्र का अर्थ बहुआयामी है। प्रत्येक अनुच्छेद के अर्थ के कई छोटे भाग या पहलू हैं जो उस एकमात्र, समेकित अर्थ के लिए योगदान करते हैं जिसे हमने इसका शाब्दिक भाव कहा है।

> बाइबल एक समृद्ध पुस्तक है। यह एक गहन पुस्तक है। यह परमेश्वर की बुद्धि से आता है, और मैं बेधड़क कहता हूँ कि परमेश्वर बुद्धि बहुत विशाल है, और जो विचार व्यक्त किए गए हैं वे विशाल हैं और उनके कई कोण हैं ... और इसलिए व्याख्याओं का मूल्यांकन करना बस बैठना और स्वयं से यह पूछने का विषय है कि, क्या यह कोण पाठ्यांश को पढ़ने का एक उपयुक्त तरीका है? ... और इसलिए आपको इस तरह से विभिन्न प्रकार के कोणों से चीजों को देखने के संदर्भ में विविधता और उपयुक्तता की संभावना के संदर्भ में विकल्पों के माध्यम से बस सोचना होगा, और फिर इस संभावना के लिए खुले रहना है कि अर्थ वास्तव में जटिल है और हो सकता है। परिणामस्वरूप, यह वास्तव में आपकी व्याख्या को समृद्ध बनाता है क्योंकि एक अनुच्छेद शायद शुरूआती समझ की तुलना में बहुत कुछ कर रहा होता है, वह शुरूआती प्रभाव जो मुझे हो सकता है, और मैं परिणामस्वरूप पाठ्यांश के किसी और के अध्ययन से सीख सकता हूँ।
>
> — डॉ. डैरल एल. बॉक

ईश्वरीय-ज्ञान और मसीही जीवन के कई अलग-अलग पहलूओं के लिए बड़े आकार के पवित्र शास्त्र के प्रत्येक अनुच्छेद का निहितार्थ है। इसलिए, यह समझना आसान है कि कलीसिया के पूरे इतिहास के दौरान क्यों कई लोगों ने यह सोचा है कि बाइबल के अनुच्छेद के अनेक अर्थ हैं। लेकिन पवित्र शास्त्र की समृद्धि के लिए सबसे जिम्मेदार दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी बाइबल के अनुच्छेद के बारे में हम जो कुछ भी कहते हैं, वह इसके व्याकरण से जुड़ा हुआ है जो प्राचीन संसार के ऐतिहासिक संदर्भ में समायोजित है। और यदि हम बाइबल को इस रीति से पढ़ते हैं, तो हम उस जटिल अर्थ की खोज करने के लिए बेहतर तरीके

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

से तैयार होंगे जो परमेश्वर और उसके द्वारा प्रेरित मानवीय लेखकों ने पवित्र शास्त्र के मूल श्रोताओं को बताने के लिए अभिप्रेत किया।

पवित्र शास्त्र में अर्थ की जटिलता पर हमारी चर्चा में अभी तक, हमने देखा कि प्रोटेस्टेंट लोग बाइबल के शाब्दिक भाव के महत्व और व्यापकता की दृढ़ता से क्यों पुष्टि करते हैं। इसलिए इस बिन्दु पर, हम अपने ध्यान को उस ओर मोड़ने के लिए तैयार है जिसे हम कहेंगे पवित्र शास्त्र के अनुच्छेदों का संपूर्ण महत्व।

संपूर्ण महत्व

समय-समय पर, सुसमाचारीक लोग *सेंसस प्लेनोर* अभिव्यक्ति का उपयोग करते हैं, जिसका अर्थ है, पवित्र शास्त्र का "संपूर्ण महत्व।" जबकि हम बाइबल के अनुच्छेद के शाब्दिक भाव या मूल अर्थ के महत्व की पुष्टि करते हैं, हमें यह भी एहसास होता है कि बाइबल के बाद वाले भाग अक्सर पवित्र शास्त्र के पहले वाले भागों का उल्लेख उन तरीकों में करते हैं जो सिर्फ शाब्दिक या मूल भाव को नहीं दोहराते हैं। यह विशेष रूप से तब सच है जब नए नियम के लेखक बताते हैं कि पुराना नियम मसीह में कैसे पूरा होता है। नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के अनुच्छेदों की सही रीति से व्याख्या की। उन्होंने कभी भी उसके मूल अर्थ का खंडन नहीं किया। लेकिन उन्होंने स्वयं को सिर्फ मूल अर्थ तक ही सीमित नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने इन पुराने नियम के अनुच्छेदों के लिए, *सेसंस प्लेनोर,* एक पूर्ण भाव को समझा। और इसलिए, इन पंक्तियों के साथ, हम बाइबल के अनुच्छेद के "संपूर्ण भाव" या "संपूर्ण महत्व" की बात करेंगे।

इस श्रृंखला में, हम बाइबल के पाठ्यांश के संपूर्ण महत्व को इस रीति से परिभाषित करेंगे:

> **एक पाठ्यांश का पूरा महत्व, जिसमें इसका मूल अर्थ, बाइबल वाले इसके सभी विस्तारण, और इसके सभी वैध अनुप्रयोग शामिल हैं।**

मूल अर्थ पवित्र शास्त्र का शाब्दिक भाव है, जो पाठ्यांश का सबसे बुनियादी पहलू है। बाइबल के विस्तारण ऐसे स्थान हैं जहाँ पवित्र शास्त्र का एक भाग पवित्र शास्त्र के अन्य भाग पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में टिप्पणी करता है। और वैध अनुप्रयोग वे निहितार्थ हैं जो पवित्र शास्त्र के पास उसके पाठकों के जीवनों के लिए हैं।

बाइबल के संपूर्ण महत्व की इस परिभाषा के अनुसार, हमारी चर्चा तीन भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम मूल अर्थ की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करेंगे। दूसरा, हम बाइबल के विस्तारणों की चर्चा करेंगे। और तीसरा, हम अपने जीवनों के लिए पवित्र शास्त्र के वैध अनुप्रयोगों का पता लगाएंगे। आइए वास्तविक अर्थ के साथ शुरू करते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वास्तविक अर्थ

एक पिछले अध्याय में, हमने मूल अर्थ को इस प्रकार परिभाषित किया:

> **वे अवधारणाएं, व्यवहार और भावनाएं जिन्हें इसके पहले श्रोताओं को बताने के लिए दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से दस्तावेज को अभिप्रेत किया था।**

जैसा कि हमने कहा है, कि अनुच्छेद का मूल अर्थ इसके शाब्दिक भाव के बराबर है। और जैसा कि यह परिभाषा दिखाती है, मूल अर्थ बहुआयामी है। पवित्र शास्त्र को कई स्तरों पर अपने पहले श्रोताओं से संवाद करना था। यह अवधारणाओं को संप्रेषित करता है, जो कि ऐसे विचार हैं जिन्हें पाठ्यांश में पहचानने के लिए मूल श्रोताओं को सक्षम होना चाहिए था। यह व्यवहारों को संप्रेषित करता है, जो कि ऐसी गतिविधियाँ हैं जो पाठ्यांश में या तो किए गए या नहीं किए गए थे। और यह भावनाओं को संप्रेषित करता है, ऐसे मनोभाव और अनुभुतियाँ जो कि या तो पाठ्यांश द्वारा बताए गए या उसमें व्यक्त हैं।

आइए निर्गमन 20:13 को देखकर यह समझने का प्रयास करे कि कैसे कोई पाठ्यांश अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को संप्रेषित कर सकता है, यह वचन यह बताता है:

> **तू खून न करना (निर्गमन 20:13)।**

आइए इस अनुच्छेद के बारे में मूल अर्थ की हमारी परिभाषा के संदर्भ में सोचें। हत्या के खिलाफ आज्ञा को इसके पहले श्रोताओं को बताने के लिए कौन सी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से अभिप्रेत किया? खैर, अवधारणाओं के संबंध में, यह पद स्पष्ट रूप से इस विचार को बताता है कि मानव जीवन को गलत रीति से समाप्त करने की सख्त मनाही है। निहितार्थ से, यह बताता है कि मानव जीवन परमेश्वर के लिए मूल्यवान है। और यह तथ्य कि यह एक आज्ञा का रूप लेता है, सूचित करता है कि परमेश्वर मनुष्यों पर प्रभुता करता है।

व्यवहारों के संबंध में, यह आज्ञा परमेश्वर के ऐतिहासिक कार्यों के रिकॉर्ड का हिस्सा है — परमेश्वर स्वयं इस आज्ञा को मूसा तक पहुँचाने के कार्य में शामिल हुआ, और मूसा ने इसे परमेश्वर के लोगों के सामने प्रस्तुत किया। और इसने इंगित किया कि परमेश्वर उन लोगों से, जिनका मूसा ने जंगल से लेकर प्रतिज्ञा किए हुए देश तक अगवाई थी और जो निर्गमन की पुस्तक के मूल श्रोता भी थे, यह चाहता था —— कि वे हत्या करने के कार्य में शामिल न हों।

और भावनाओं के संबंध में, यह अनुच्छेद हमें सिखाता है कि परमेश्वर हत्या से घृणा करता है, और वह न्याय को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

हत्या के खिलाफ आज्ञा का मूल अर्थ बहुआयामी था, जिसका उद्देश्य परमेश्वर और मूसा की स्पष्ट अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को उसके मूल श्रोताओं का बताना था, और उन्हें यह भी सिखाना था कि स्वयं उनकी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के संबंध में परमेश्वर की उनसे क्या अपेक्षा है। और ऐसा ही कुछ बाइबल के हर एक अनुच्छेद में यही बात लागु होती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिणामस्वरूप, यदि हम पाठ्यांश का संपूर्ण महत्व समझना चाहते हैं, तो हमें मूल अर्थ की जटिलताओं की सराहना करनी होगी। यदि हम इन जटिलताओं की अनदेखी करते हैं, तो जो कुछ पवित्र शास्त्र हमें सीखाना चाहता है, उसमें से बहुत कुछ सीखने से हम चूक जाएंगे।

> रिफॉर्मर लोगों ने पाठ्यांश की व्याख्या करने के लिए दो तरीके विकसित किए: व्याकरणिक और ऐतिहासिक। एक ओर, वे पूछते हैं कि व्याकरणिक रूप से बोलते हुए पाठ्यांश क्या कहता है? दूसरी ओर, इसने अपनी पहली सेटिंग में क्या कहा? यह कहिए कि, इन प्रश्नों के लिए वे दो उत्तर मापदंडों को प्रदान करते हैं। इन सीमाओं के अंतर्गत, विभिन्न प्रकार की व्याख्याएं मान्य और वैध हैं, और इसका अर्थ है कि उन मापदंड़ों के अंतर्गत हमें विनम्रता का अभ्यास करने की आवश्यकता है कि जब हम हाँ कहते हैं, तो इसे अलग तरीके से समझा जा सकता है। अब, यदि इनमें से एक व्याख्या व्याकरणिक रूप से वास्तव में असंभव है, तो हम कहते हैं नहीं, यह गलत है। या यदि कोई ऐतिहासिक रूप से असंभव है — उस सेटिंग में उनका अर्थ यह नहीं हो सकता था — तो उसे खारिज किया जाना है। लेकिन उन दो मापदंडों के अंतर्गत, विभिन्न प्रकार की व्याख्याएं संभव हैं, और जैसे कि मैं कहता हूँ, हमें स्वयं अपनी समझ के संबंध में विनम्रता का अभ्यास करने की आवश्यकता है।
>
> — डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

> पवित्र शास्त्र को काफी हद तक एक से अधिक तरीकों से पढ़ा जा सकता है। अब, इसका अर्थ यह नहीं है कि कुछ भी चलता है। कुछ चीज़ें स्पष्ट रूप से नहीं चलेंगी। और यह एक बार फिर से वहाँ पर है, उदाहरण के लिए, जहाँ धर्म-सिद्धांतों में प्रस्तुत किए गए प्रमुख विषय इतने उपयोगी हैं। विश्वास का नियम हमें पवित्र शास्त्र के गलत अध्ययनों के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है ... मूल रूप से कुछ तो गलत है जब हम बाइबल के अन्य व्याख्याकार के साथ बातचीत में संलग्न होते हैं और हम इसे एक अभिमानी, सिद्धांतवादी आत्मा के साथ करते हैं।
>
> — डॉ. कैरी विन्ज़ैन्ट

अब जबकि हमने देख लिया है कि कैसे मूल अर्थ पवित्र शास्त्र के संपूर्ण महत्व के लिए योगदान देता है, तो आइए अपना ध्यान बाइबल के विस्तारण पर लगाएं।

बाइबल के विस्तारण

बाइबल के विस्तारण हैं:

> ऐसे स्थान जहाँ पवित्र शास्त्र का एक भाग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पवित्र शास्त्र में दूसरे अनुच्छेद के अर्थ के किसी पहलू पर टिप्पणी करता है।

क्योंकि संपूर्ण पवित्र शास्त्र प्रेरित एवं अचूक है, ये विस्तारण हमेशा मूल अर्थ के साथ सहमति व्यक्त करते और पुष्टि करते हैं। कभी-कभी, किसी विस्तारण को मूल अर्थ के एक पहलू की पुनरावृत्ति के रूप में कहा जाता है। अन्य समयों पर, एक बाइबल विस्तारण उन चीज़ों के स्पष्टीकरण के रूप में कहा जा सकता है जो पूरी तरह से स्पष्ट या अच्छी तरह से समझ में नहीं आए थे। और फिर भी अन्य समयों पर, एक बाइबल विस्तारण किसी विशेष अनुच्छेद के अर्थ का विस्तार हो सकता है।

उदाहरण के लिए, बाइबल कई स्थानों पर हत्या के खिलाफ आज्ञा का विस्तार करती है। यह आज्ञा निर्गमन 20:13 में पहली बार दर्ज की गई है, जो कहता है:

> तू खून न करना (निर्गमन 20:13)।

इस अनुच्छेद का पहला बाइबल विस्तारण जिसका हम उल्लेख करेंगे वह मुख्य रूप से व्यवस्थाविवरण 5 में इन सटीक शब्दों की पुनरावृत्ति है, जहाँ मूसा ने इस्राएल देश को दस आज्ञाओं की विषय-वस्तु को याद दिलाया था। व्यवस्थाविवरण 5:17 में, पवित्र शास्त्र फिर से कहता है:

> तू खून न करना (व्यवस्थाविवरण 5:17)।

इस पुनरावृत्ति ने आज्ञा की पुष्टि की और परमेश्वर के लोगों को उसकी वाचा की शर्तों को याद दिलाया। बेशक, जब एक विस्तारण को एक पुनरावृत्ति के रूप में कहा भी जाता है, तो यह कभी भी उस बात को खाली दोहराता नहीं है जो पहले कहा गया था — विस्तारण का संदर्भ हमेशा इसके अर्थ में कुछ जोड़ता है। फिर भी, यह पहचानने में मददगार है कि स्वरूप में कुछ विस्तारण पुनरावृत्तियां हैं।

दूसरे प्रकार का विस्तारण जिसको हमने सूचीबद्ध किया वह स्पष्टीकरण था, और हम गिनती 35 में हत्या के खिलाफ आज्ञा का स्पष्टीकरण पाते हैं। उस अध्याय में, मूसा ने मानव हत्या और दुर्घटनावश मानवहत्या के बीच अंतर किया। गिनती 35:20-25 में मूसा ने जो लिखा उसे सुनिए:

> और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल दे, या घात लगाकर कुछ उस पर ऐसे फेंक दे कि वह मर जाए, या शत्रुता से उसको अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो जिसने मारा हो वह अवश्य मार डाला जाए; वह खूनी ठहरेगा ... परन्तु यदि कोई किसी को बिना सोचे, और बिना शत्रुता रखे ढकेल दे, या बिना घात लगाए उस पर कुछ फेंक दे, या ऐसा कोई पत्थर लेकर, जिससे कोई मर सकता है, दूसरे को बिना देखे उस पर फेंक दे, और वह मर जाए, ... तो मण्डली ... उस खूनी को ... बचाकर ... लौटा दे (गिनती 35:20-25)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यह स्पष्टीकरण उस जानकारी को प्रदान करता है जो हत्या के खिलाफ आज्ञा को समझने के लिए महत्वपूर्ण था। यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य को मारने की हर एक गैरकानूनी घटना भी मानवहत्या की घटना नहीं है और कि दुर्घटनाओं को उसी रीति से दंडित नहीं किया जाना चाहिए जिस रीति से मानवहत्या का दंड दिया जाता है। जब किसी हत्या में दुर्भावनापूर्ण पूर्व-विचार शामिल होता है, अर्थात जब हत्या जानबूझकर और दुष्टता से प्रेरित होती है, तो आज्ञा कठोर दंड की माँग करती है। लेकिन जब हत्या दुर्घटनावश होती है, तो यह आज्ञा वास्तव में उस व्यक्ति की हत्या की मनाही करती है जिसने उस कृत्य को किया था।

तीसरे प्रकार का बाइबल विस्तारण जिसको हमने सूचीबद्ध किया वह विस्तार है, जिसमें पवित्र शास्त्र उस अनुच्छेद या विषय के बारे में अतिरिक्त जानकारी प्रदान करता है जिसे वह संदर्भित करता है। हम मत्ती 5 में मानवहत्या के खिलाफ आज्ञा का एक विस्तार पाते हैं, जहाँ यीशु ने इस आज्ञा के दायरे को गलत रीति से सीमित करने के लिए अपने समय में धर्मगुरूओं की आलोचना की। मत्ती 5:21-22 में मानवहत्या के खिलाफ आज्ञा के बारे में यीशु ने जो सिखाया उसे सुनिए:

> तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि "हत्या न करना, और 'जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।" परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा (मत्ती 5:21-22)।

यहाँ, यीशु ने मानव जीवन की गैरकानूनी रूप से हत्या करने के शारीरिक कृत्य से बढ़कर इसे लागू करने के द्वारा मानवहत्या के खिलाफ आज्ञा का विस्तार किया। यीशु के विस्तारण के अनुसार, अधर्मी क्रोध उसी सिद्धांत का उल्लंघन करता है जो मानवहत्या करती है। क्रोध हत्या के जैसा इतना बुरा नहीं है, लेकिन यह परमेश्वर के चरित्र के उसी पहलू पर आघात करता है।

> यीशु, निश्चित रूप से, पहाड़ी उपदेश में, वह कई आज्ञाओं का उद्धरण देता है, उनमें से एक है, "तुम सुन चुके हो ... हत्या न करना।" और फिर वह कहता है, "लेकिन मैं तुमसे यह कहता हूँ, यह हत्या करने के बारे में नहीं है, यह घृणा के बारे में है। यही मुद्दा है।" और इसलिए मैं सोचता हूँ कि आज्ञाओं के सही अर्थ को समझने के लिए पहाड़ी पर उपदेश में यीशु को पढ़ना हमारे लिए अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि मुझे लगता है कि यही बात यीशु कर रहा है ... यीशु असल मुद्दे पर बात कर रहा है। जो यीशु हमें दिखा रहा है — और मुझे लगता है कि हमें बस वह लागू करना है जो यीशु कह रहा है — वह यह कि हत्या की आज्ञा, मुद्दा यह नहीं है कि मैं एक अच्छा व्यक्ति हूँ क्योंकि मैने कभी हत्या नहीं की है; मैने आज्ञा का पालन किया है। जो यीशु कह रहा है वह यह है ... यह हृदय में इरादे के बारे में है जहाँ से हत्या उत्पन्न होती है, और वह घृणा है।
>
> — डॉ. ब्रायन जे. वीकर्स

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> यीशु हमें निर्गमन के पीछे सिद्धांतों पर वापस जाने के लिए आमंत्रित करता है कि पाप न करना ही सिर्फ पर्याप्त नहीं है, लेकिन आपको पाप करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। अर्थात यह कि, यीशु न सिर्फ हमारे व्यवहार में बल्कि हमारे चरित्र में भी रुचि रखता है, न सिर्फ हम जो करते हैं लेकिन उसमें जो हम हैं। इसलिए वह कहता है, "तुमने सुना था यह कहता है तू खून न करना।" यीशु कहता है तू खून करने की इच्छा न करना ,,, इसलिए वह व्यवस्था के मर्म को खोजता है। वह सिद्धांत की खोज करता है, और यह सिद्धांत परा-सांस्कृतिक है और हमें उस इच्छा को रखने के लिए आमंत्रित करता है जो परमेश्वर रखता है, और हम सिर्फ तभी ऐसा कर सकते हैं जब हमारे मनों में कार्यरत उसके राज्य की शक्ति के द्वारा, हमारे हृदय परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा परिवर्तित होते हैं।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

जब यीशु और दूसरे गुरूओं ने पवित्र शास्त्र को संदर्भित किया, तो उन्होंने आमतौर पर जो "लिखित" था उसके बारे में बात की। लेकिन मत्ती 5:21-22 में, जो "कहा" गया था यीशु ने उस बारे में बात की, न कि जो "लिखा" गया था। जो लिखा गया था उस बारे में यहूदी गुरूओं ने जो कहा उसका उल्लेख करने का यह एक सामान्य तरीका था। पुराने नियम को चुनौती देने से दूर, यीशु पुराने नियम की उन लोकप्रिय व्याख्याओं का खंडन कर रहा था जो पुराने नियम के मूल अर्थ से भटक गए थे।

यह विस्तारण आज्ञा के मूल अर्थ का विस्तार था क्योंकि यह स्पष्टीकरण से बढ़कर था। इसने स्वयं आज्ञा के शब्दों के अर्थ ही को सिर्फ स्पष्ट नहीं किया। इसके बजाय, इसने अन्य अनुच्छेदों से उन तरीकों से आज्ञा को सहारा देने के लिए अतिरिक्त जानकारी को लिया जिसने परमेश्वर के प्रकाशन के व्यापक संदर्भ के भीतर आज्ञा के मूल इरादे को प्रकट किया। इस पृष्ठभूमि के संदर्भ में देखने पर, यीशु ने बताया कि सदा से मानवता के लिए परमेश्वर की चिंता को प्रकट करने के लिए हत्या के खिलाफ आज्ञा को अभिप्रेत किया गया था, और यह कि इसके मूल निहितार्थ हत्या की मात्र रोकथाम से कहीं ज्यादा हैं।

> खैर, परमेश्वर निश्चित रूप से निर्गमन में हत्या की मनाही करता है, और जब यीशु पहाड़ी उपदेश में इस आज्ञा को संबोधित करता है, तो वह आगे कहता है कि यह घृणा और क्रोध को शामिल करता है, जिन्हें हम "हृदय के पाप" कहेंगे। अब वहाँ क्या हो रहा है इसको समझाने के कई तरीकें हैं। यीशु उस मूल आज्ञा के साथ क्या कर रहा है? कुछ लोगों ने कहा है कि वह इसे एक ओर सरका रहा है और वह कुछ नया पेश कर रहा है। अन्य लोगों ने कहा है कि जबकि निर्गमन में दी गई आज्ञा खाली कुछ बाहरी सतह पर है, और अब यीशु आ रहा है और वह कुछ एकदम नया जोड़ रहा है, कुछ ऐसा जो उस निर्गमन वाली आज्ञा में अप्रत्याशित और शामिल नहीं है, और वह व्यवस्था को आंतरिक बना रहा है। मैं सोचता हूँ कि सबसे अच्छा दृष्टिकोण यह कहना है कि यीशु कुछ एकदम नई बात नहीं कह रहा

> है, लेकिन वह उस आज्ञा में से जो उसमें पहले ही से है, बस उसका विवरण दे रहा है। मैं सोचता हूँ यह सुस्पष्ट है, उदाहरण के लिए, जब आप दस आज्ञा को देखते हैं, दसवीं आज्ञा, "तू किसी के घर का लालच न करना।" यह वह आज्ञा है जो हृदय और हृदय के पापों को संबोधित करती है। और यह, मैं सोचता हूँ, पूरी दस आज्ञाओं के लिए एक कुंजी के रूप में अभिप्रेत है, यह कि हमें दस आज्ञाओं की आज्ञाओं को सिर्फ बाहरी व्यवहारों को संबोधित करता हुआ ही नहीं, बल्कि इन व्यवहारों के अंतर्निहित हृदय की प्रवृतियों, हृदय के पापों, हृदय के व्यवहारों को भी संबोधित करता हुआ समझना चाहिए। और इसलिए यीशु पहाड़ी उपदेश में जो करता है वह यह है कि वह व्यवस्था को इसके पूरे इरादों के साथ बहाल कर रहा एवं उसका विवरण दे रहा है जबकि वह इतिहास के दौरान आने वाली भ्रष्टताओं को दूर कर रहा है, उन आज्ञाओं को परमेश्वर के लोगों के जीवन में पढ़ने का इतिहास। इसलिए यीशु खड़ा है, व्यवस्था का वास्तविक उद्देश्य हमें बता रहा है और व्यवस्था को इसकी संपूर्णता में हमें दिखा रहा है।
>
> — डॉ. गाय वॉटर्स

जितना अधिक हम पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते हैं, उतना ही अधिक हम देखते हैं कि बाइबल स्वयं को बार-बार विस्तारित करती है। भविष्यद्वक्ता और भजनकार नियमित रूप से मूसा की व्यवस्था का उल्लेख करते हैं। यीशु ने लगातार पुराने नियम को फिर से संदर्भित किया। और नए नियम के लेखकों ने बार-बार यही सब किया। कई बार, यह समझने में हमें कठिनाई हो सकती है कि बाइबल के लेखक अपने निष्कर्षों पर कैसे पहुँचे। लेकिन हर मामले में, उन्हें दोहराने के द्वारा, उन्हें स्पष्ट करने के द्वारा और यहाँ तक कि उनका विस्तार करने के द्वारा बाइबल के विस्तारण बाइबल के अन्य भागों की पुष्टि करते हैं। और उन्होंने यह सब पवित्र आत्मा की प्रेरणा तले किया। और इस कारण से, जब हम पवित्र शास्त्र के अर्थ का पता लगाते हैं, हमें उन सभी स्थानों के लिए स्वयं का स्वीकरण एवं समर्पण देना चाहिए जहाँ पवित्र शास्त्र स्वयं को विस्तारित करता है।

अब तक पवित्र शास्त्र के संपूर्ण महत्व की हमारी चर्चा में, हमने मूल अर्थ और बाइबल के विस्तारणों को देखा है। इसलिए, अब हम उन वैध अनुप्रयोगों पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं जिन्हें हम बाइबल के पाठ्यांश से निकाल सकते हैं।

वैध अनुप्रयोग

हम वैध अनुप्रयोगों को ऐसे परिभाषित करेंगे:

> ऐसे वैचारिक, व्यवहारिक और भावनात्मक प्रभाव जो अनुच्छेद के मूल अर्थ और बाइबल के विस्तारण का उनके श्रोताओं पर होना चाहिए।

मूल अर्थ और बाइबल के विस्तारण प्रेरित हैं, और हर युग में सभी विश्वासियों पर पूर्ण अधिकार रखते हैं। यही कारण है कि पवित्र शास्त्र के सभी वैध अनुप्रयोगों को बाइबल के मूल अर्थ और विस्तारणों से निकाला जाना एवं उनके अनुरूप होना चाहिए। लेकिन हमारे अनुप्रयोग परमेश्वर द्वारा प्रेरित नहीं हैं। हम गलती करते हैं, और हमारे अनुप्रयोग सदैव संशोधन और सुधार के अधीन होते हैं। फिर भी, उस हद तक कि हमारे अनुप्रयोग पवित्र शास्त्र के लिए सच हैं, वे बाइबल के लिए परमेश्वर के इच्छित उपयोग का हिस्सा हैं, और इसलिए वे बाइबल के संपूर्ण महत्व का हिस्सा हैं।

बाइबल के सिद्धांत का एक प्रसिद्ध प्रोटेस्टेंट सारांश, 1689 का *लंदन बैपटिस्ट कनफेशन ऑफ फेथ*, इस विचार को अपने अध्याय 1, भाग 10 में व्यक्त करता है।

> वह सर्वोच्च न्यायाधीश, जिसके द्वारा धर्म के सभी विवादों को निर्धारित किया जाना है, और परिषदों के सभी आदेशों, मनुष्यों के सिद्धांतों, और निजी आत्माओं को परखा जाना है, और जिसके फैसलों में हमें भरोसा करना है, वह और कोई नहीं बल्कि पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया पवित्र शास्त्र है।

प्रोटेस्टेंट कलीसिया लगभग सार्वभौमिक रूप से स्वीकार करती है कि बाइबल की मानवीय व्याख्या और अनुप्रयोग में चूक हो सकती है। इसलिए, जबकि मानवीय अधिकार वैध है, फिर भी वे सत्य के निर्णायक न्यायाधीश कभी नहीं हो सकते। और जबकि हमारे जीवनों के लिए पवित्र शास्त्र का अनुप्रयोग आवश्यक है, फिर भी हमें अनुप्रयोगों को ऐसे नहीं देखना चाहिए जैसे कि वे बाइबल के समान अचूक थे।

> जब हम प्रचार करते हैं, तो वहाँ प्रदीपादन — स्पष्टीकरण — और अनुप्रयोग होता है। परमेश्वर के वचन का अर्थ एक होना चाहिए, पाठ्यांश का अर्थ एक होना चाहिए, और इसे सदियों के दौरान एक समान होना चाहिए। लेकिन बाद में, जब संदर्भ में पाठ्यांश को देखने की बात आती है, तो इसमें कल और आज के लिए अलग-अलग अनुप्रयोग हो सकते हैं; यह मानक की भिन्नता नहीं है। यह अनुप्रयोग का एक सरल अंतर है।
>
> — डॉ. मिगुएल नूनेज़, अनुवादित

> पवित्र शास्त्र की सिर्फ एक व्याख्या हो सकती है। हम एक व्याख्या से अनेक अनुप्रयोग प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन उस अनुप्रयोग को व्याख्या के लिए सच रहना चाहिए। हमें सदैव परमेश्वर के वचन की व्याख्या करने, उस विशेष अनुच्छेद या उस विशेष पद के लिए परमेश्वर द्वारा इच्छित अर्थ को सामने लाने की कोशिश करनी चाहिए, नहीं तो हम स्व-व्याख्या करने लगेंगे, जहाँ पर हम स्वयं अपनी रायों और स्वयं अपनी व्याख्याओं, स्वयं अपने विचारों को जो उनका अर्थ हो सकता है उसमें डालते हैं। उससे आप बहुत ही दोषपूर्ण अनुप्रयोगों को पा सकते हैं, जिससे आप उन लोगों को नुकसान की ओर ले जा सकते हैं जिन्हें आप सिखा या उपदेश दे रहे हैं ...

> और इसलिए व्याख्या को अनुप्रयोग के लिए सही होना चाहिए; अनुप्रयोग को व्याख्या के लिए सही होना चाहिए।
>
> — रेव्ह. थेड जेम्स, जूनियर

यह ध्यान में रखते हुए कि वैध अनुप्रयोग पवित्र शास्त्र के संपूर्ण महत्व का हिस्सा हैं, आइए देखें कि एक अन्य प्रोटेस्टेंट परंपरा, जिसका प्रतिनिधित्व *हायडलबर्ग कैटेकिज़्म* द्वारा किया जाता है, उसने कैसे हत्या के खिलाफ आज्ञा को लागू किया। इस कैटेकिज़्म को सोलहवीं शताब्दी में यूरोप में लिखा गया था ताकि पवित्र शास्त्र की शिक्षा का एक उपयोगी फिर भी चूकने वाला सारांश प्रदान किया जा सके। *हायडलबर्ग कैटेकिज़्म* का प्रश्न संख्या 105 पूछता है:

> छठी आज्ञा में आपके लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है?

और कैटेकिज़्म उत्तर देता है:

> मुझे अपने विचारों, अपने शब्दों, अपने रूप या हाव-भाव, और निश्चित रूप से कोई भी वास्तविक कार्यों के द्वारा अपने पड़ोसी की निन्दा, अपमान, या हत्या नहीं करनी है, और मुझे इन कार्यों में दूसरों का साथ नहीं देना है; इसके बजाय, मुझे बदला लेने की सभी इच्छा को दूर हटाना चाहिए। मुझे स्वयं को भी नुकसान या लापरवाही से खतरे में नहीं डालना है।

कैटेकिज़्म हत्या के खिलाफ आज्ञा को बाइबल के कई विस्तारणों के प्रकाश में व्याख्या कर रहा है, जिसमें मत्ती 5 में यीशु के विस्तारण के साथ-साथ रोमियों 12 में बदले के बारे में पौलुस की शिक्षा भी शामिल है।

जैसा कि हम देख सकते हैं, "खून न करना" वाली साधारण आज्ञा का संपूर्ण महत्व अत्यंत जटिल और बहुआयामी हो सकता है। यीशु और पौलुस का अनुसरण करते हुए, *हायडलबर्ग कैटेकिज़्म* के लेखकों ने वैध रीति से इस आज्ञा को न सिर्फ मानव जीवन की अन्यायपूर्ण हत्या करने पर लागू किया, बल्कि उन सभी के लिए भी जो यदि मात्रा में नहीं लेकिन प्रकार में हत्या के समान हैं, जैसे घृणा और निन्दा। इस तरह के अनुप्रयोग हत्या के खिलाफ निषेध के मूल अर्थ के साथ-साथ इसके बाइबिल विस्तारण पर भी आधारित हैं, और वे हमारे समकालीन परिस्थितियों में उपयुक्त हैं। इन कारणों से, वे हत्या के खिलाफ आज्ञा के संपूर्ण महत्व का हिस्सा हैं।

> खैर, यदि आप प्रश्न पूछते हैं, "'तू खून न करना' वाली आज्ञा को लागू करने के वैध तरीके क्या हैं?" एकदम स्पष्ट रूप से इसका अर्थ है कि हमें लोगों को नहीं मारना चाहिए। लेकिन यह निष्कर्ष निकालना अपर्याप्त होगा कि यही वह सब कुछ है जो यह आज्ञा कह रही है। यीशु ने स्वयं पहाड़ी उपदेश में कहा था कि यदि तू अपने भाई से क्रोधित है, तो तुमने हत्या कर दी है। और फिर वह हमें यह देखने के लिए प्रोत्साहित करेगा कि हमारा क्रोध और लोगों से हमारी नाराजगी उस विशेष आज्ञा को तोड़ रही है। इसलिए आज इसे लागू करने के संदर्भ में, मैं सोचता हूँ, यह महत्वपूर्ण है

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> कि लोगों की यह देखने में हम मदद करें कि दस आज्ञाएं अभी भी गंभीरता से प्रासंगिक हैं क्योंकि वे परमेश्वर के खिलाफ अपराध की गंभीरता को समझते हैं, और वे हमसे सराहना करवाते हैं कि हमारे छोटे कार्य, जैसा कि हम उन्हें समझते हैं, चाहे वे वासना के हों, या क्रोध, या अन्य भावनाएं और जुनून, वास्तव में बहुत आगे बढ़ जाने की संभावना रखते हैं यदि परमेश्वर उनके साथ हृदय-स्तर पर कार्य नहीं करता है। इसलिए, जैसा कि यह था, बाइबल के इस पाठचांश के अनुप्रयोग को लोगों को यह देखने में मदद करनी चाहिए, कि कैसे वे उस समस्या को शुरूआत में ही रोक सकते हैं जो बहुत खराब हो सकती थी। और यीशु पहाड़ी उपदेश में बताते हैं कि वास्तव में शुरूआती स्तर पर भी समस्याएं गंभीर होती हैं।
>
> — डॉ. सायमन वायबर्ट

> पहाड़ी उपदेश में, यीशु हमें व्यवस्था पर अपनी आधिकारिक शिक्षा दे रहा है, और जो चीज़ वह करता है वह आज्ञाओं को लेता है और जैसे कि उन्हें होना चाहिए था वह उन्हें हृदय के गहराई पर ले जाता है। और इसलिए जब वह कहता है, "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था 'हत्या न करना,'" यह सच बना रहता है। लेकिन यीशु उससे आगे निकल जाता है और हमें व्यवस्था के वास्तविक इरादे को दर्शाता है। वह हमें बताता है कि न सिर्फ हमें हत्या नहीं करनी है, लेकिन हमें जानलेवा वचनों को भी नहीं बोलना है, ऐसे वचन जो घृणास्पद हो सकते हैं, ऐसे वचन जो यह कहने के बराबर होंगे, "हे मूर्ख।" या, हमें अपने भाई से घृणा नहीं करनी है। और दूसरे शब्दों में, वह हमें दिखा रहा है, कि निर्गमन में, दस आज्ञाओं में व्यवस्था, सिर्फ कुछ नहीं करने के बारे में नहीं है। वह हमें दिखा रहा है कि जब हम इन आज्ञाओं को पढ़ते हैं तो हमें समझना चाहिए कि यहाँ एक गहरा उद्देश्य है। और इसलिए इन आज्ञाओं को समझने का तरीका सिर्फ एक खाली निषेधाज्ञा नहीं है बल्कि एक सकारात्मक आज्ञा भी है। यह खाली 'हत्या न करना" नहीं है, लेकिन "जीवन को बढ़ावा देना है" ... और इसलिए जब यीशु पुराने नियम के महत्वपूर्ण भागों का विश्लेषण करता है, तो वह वास्तव में इसे दो बातों पर केंद्रित कर देता है: परमेश्वर को अपने पूरे मन से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना। प्रेम करना एक सकारात्मक आज्ञा है यह व्यवस्था का असली इरादा है।
>
> — डॉ. ब्रैन्डन क्रोव

आधुनिक संसार में, मसीहों को बाइबल की हत्या के निषेधाज्ञा से संबंधित सभी प्रकार के मुद्दों के बारे में निर्णय देना पड़ता है। हमें गर्भपात, इच्छामृत्यु, आत्महत्या, युद्ध, दयनीय गरीबी और मानव जीवन के लिए कई अन्य खतरों को संबोधित करना पड़ता है। प्रत्येक मामले में, हत्या के खिलाफ आज्ञा हम पर जिम्मेदारियों को डालता है। और पवित्र शास्त्र के व्याख्याकारों

के रूप में हमारे कार्यों में से एक यह पता लगाना है कि वे जिम्मेदारियाँ क्या हैं। जब हम यह करते हैं, तो हम अधिक पूर्णता से उजागर करते हैं कि वास्तव में आज्ञा का अर्थ क्या है।

उपसंहार

अर्थ की जटिलता पर इस अध्याय में, हमने पवित्र शास्त्र के शाब्दिक भाव को उसके एकमात्र, व्याकरणिक-ऐतिहासिक अर्थ के रूप में देखने के इतिहास पर चर्चा की है, और हमने किसी भी बाइबल पाठ्यांश के संपूर्ण महत्व को उसके मूल अर्थ, बाइबल के विस्तारण, और वैध अनुप्रयोगों के संदर्भ में बताया है।

जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा है, बाइबल के हर एक अनुच्छेद के लिए एक जटिल मूल अर्थ है। और यह इतना जटिल है कि यह मूल श्रोताओं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को अलग-अलग तरीकों से छूता है। लेकिन इसके बढ़कर, इस जटिल मूल अर्थ से बने कई आंशिक सारांश हैं। मूल अर्थ एक अचूक ढांचे, हमारी समझ के लिए एक बुनियाद को प्रदान करता है। लेकिन पवित्र शास्त्र के संपूर्ण महत्व की जानकारी को पाने के लिए, हमें बाइबल के विस्तारण में भी मार्गदर्शन खोजना है और हमें आज अपने संसार के लिए कई वैध अनुप्रयोगों को भी बनाना है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।